विशेष लेख

एक किसान की जिन्दगी

खेती मनुष्य के शुरुआती उत्पादन कार्यों में से एक है। सभ्य मानव जीवन की शुरुआत से लेकर आज तक इसने एक लम्बा सफर तय किया है। आगे चल कर उत्पादन के नये-नये क्षेत्र खुलते गये और आबादी के अलग-अलग हिस्से उनमें लगते गये। लेकिन समाज के लिए भोजन और अन्य जरूरतों के लिए कच्चा माल पैदा करने के जिम्मेदारी किसानों के कन्धों पर ही रही। विकास के बदलते दौर में उनके शोषण और लूट के तौर-तरीकों में भी बदलाव आये हैं जो आज पहले से कहीं ज्यादा सूक्ष्म और जटिल हो गये हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी खेती के काम में लगे किसान चारो तरफ तेजी से बदल रही दुनिया को हैरत से निहारते हुए निष्काम कर्मयोगी के तरह खेती के काम में लगे रहे।

यहां हम एक ऐसे ही किसान की जीवन-चर्या और उसकी वास्तविक स्थिति का जायजा लेने का प्रयास करेंगे। वैसे तो यह एक किसान की कहानी है लेकिन यह देश भर के किसानों की स्थिति को समझने में सहायक हो सकती है। यह कहानी गंगा-यमुना के दोआब के इलाके की है। यहां की जमीन दुनिया की सबसे उर्वर जमीनों में से एक है। भू-जल का संकट भी अभी ज्यादा गम्भीर नहीं है। बाढ़ व जल भराव के कारण भी फसलों को कोई नुकसान नहीं होता। इस किसान की जमीन गांव की अव्वल दर्जे की जमीन है जिस पर ये मुख्यत: गन्ना उगाते हैं। गन्ना एक ऐसी फसल है जिस पर अच्छे-बुरे मौसम का कोई खास असर नहीं पड़ता। यानी यहां के किसानों को बहुत सारी प्राकृतिक सहूलियतें हासिल हैं। जमीन के मालिकाने के रूप में आजादी से पहले यहां मुख्यत: महालबारी प्रथा थी, इसलिए यहां के किसान जमींदारों द्वारा की जाने वाली वक्त-बे-वक्त की बेदखली और शोषण-उत्पीड़न से काफी हद तक बचे रहे। इनकी अधिकांश जमीन आजादी के पहले से ही नहर द्वारा सिंचित है। चकबन्दी हो चुकी है। खेत एक ही चक्र में हैं। हरित क्रान्ति का भी इन्हें लाभ मिला है। इनका गांव जिला मुख्यालय से मात्र 9 किलोमीटर दूर है। चीनी मिल और मंडी भी गांव से बहुत नजदीक और पक्की सड़क से जुड़ी है। इनकी स्थिति से तुलना करके हम ऐसे किसानों की स्थिति का अनुमान आसानी से लगा सकते हैं जिनकी जमीनें कम उपजाऊ हैं, सिंचाई के पर्याप्त साधन नहीं हैं और जिन्हें सस्ते दामों पर नई तकनीक, अच्छे बीज, खाद और खेती के उपकरण उपलब्ध नहीं करवाये गये हैं अथवा जिनकी जमीनें छोटे-छोटे टुकड़ों में कई जगह बिखरी हुई हैं और बाजार से दूर हैं।

जमीन के रकबे के लिहाज से ये 25 फीसदी ऊपरी किसान परिवारों में शामिल हैं। इनके पास साढ़े तैंतीस बीघा यानी कच्चा साढ़े पांच एकड़ जमीन है। सिंचाई के लिए निजी ट्यूबवैल हैं। खेती के सभी मुख्य साधन जैसे-ट्रैक्टर, हैरो-टीलर, झोटा-बुग्गी, पावर चालित चारा मशीन और आटा चक्की आदि इनके निजी हैं। गेहूं की थ्रेसिंग के अलावा कोई काम किराये के साधनों से ये नहीं कराते हैं।

इनके परिवार में कुल 11 सदस्य हैं जिनमें 3 पुरुष और 3 महिलाएं पूरे तौर पर खेती और खेती के सहायक कामों में लगे हुए हैं। 3 छोटे बच्चे हैं। माता- पिता की उम्र अब काम करने की नहीं रही। खेती का लगभग पूरा काम ये खुद और दो जवान बेटे मिलकर करते हैं। घर की महिलाएं भी खेती के काम में उनकी मदद करती हैं। विशेष परिस्थितियों जैसे-गन्ना बधाई, निराई आदि काम में ही ये कभी-कभार मजदूर लगाते हैं। अच्छे बीज, खाद, कीटनाशकों और जमीन के पोषक तत्वों का प्रयोग ये करते हैं। इनका उत्पादन भी गांव के औसत उत्पादन से लगभग 15 फीसदी अधिक है।

खेती का काम ये मुख्यत: अपने ही श्रम और उपकरणों से करते हैं। किराये पर होने वाले खर्च का हिसाब लगाने से पता चला कि अगर ये मजदूरी और किराये के उपकरणों पर एक पैसा भी खर्च न करें तो भी ये अपनी बचत को 4 फीसदी से ज्यादा नहीं बढ़ा सकते। इन सभी बातों से ऐसा आभास होता है कि इनका जीवन खुशहाल होगा। लेकिन वास्तविक स्थिति क्या है, इसे हम इस परिवार की आमदनी और खर्चे का लेखा-जोखा करके समझने का प्रयास करेंगे।

खेती से आय-

इनकी मुख्य फसल गन्ना है। 28 बीघा जमीन में ये गन्ने की खेती करते हैं। बाकी साढ़े पांच बीघा जमीन में चारा व गेहूं उगाते हैं। गन्ने के खेत में और दो फसलों के बीच की अवधि में इन्होंने 8 बीघा गेहूं, 5 बीघा जई, 2 बीघा बरसीम, 5 बीघा उड़द की भी खेती की। साथ ही गेहूं और बरसीम के साथ सरसों की सहफसली खेती भी की। फसल पैदा होने पर इन्होंने 1,79,050 रुपये का गन्ना और 5000 रुपये का गेहूं बेचा। बाकी 94,150 रुपये कीमत की उपज परिवार के लिए अनाज, पशुओं के लिए चारा और बीज आदि के रूप में इस्तेमाल की गयी। बाजार में बिक्री और घरेलू उपभोग, दोनों मिलाकर कुल 2,78,200 रुपये की पैदावार हुई। इसके अलावा इन्हें खेती से कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष आय नहीं होती।

खर्च-

इनकी कुल उत्पादन लागत 77,185 रुपये आयी जिसमें 63,955 रुपये यानी कुल लागत की 82 फीसदी खरीद बाजार से की गयी। इसके अलावा अपने घर से 2,400 रुपये की कम्पोस्ट खाद और 10,830 रुपये के गन्ने और गेहूं के बीज का प्रयोग किया गया जो पिछले वर्ष की उपज थी जिसका दुबारा लागत के रूप में इस्तेमाल हुआ।

बचत-

कुल आमदनी से लागत खर्च निकालने पर कुल बचत 2,01050 रुपये हुई जिसमें इनके पूरे परिवार की मजदूरी भी शामिल है। यानी इनकी अपनी मजदूरी का अनुमान इस प्रकार लगाया जायेगा कि परिवार के 6 सदस्य एक साल में 6 महीने भी काम करते हों तो 100 रुपये दैनिक के हिसाब से इनकी मजदूरी 1,08,000 रुपये बैठती है। इसे कुल बचत से निकालने पर खेती से होने वाली शुद्ध बचत 93,015 रुपये होती है। यही वह आय है जो जमीन और खेती के साधनों से जिनकी कीमत लगभग 75 लाख रुपये है, प्राप्त होती है। यानी खेती में लगी पूंजी पर मुनाफे की दर 1.24 फीसदी वार्षिक है। मुनाफे की यह दर तब है, जब गन्ने की कीमत 130 रुपया प्रति क्विंटल थी। इससे एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि एक व्यवसाय के रूप में खेती की स्थिति क्या है। दूसरे यह कि इनकी आय का बड़ा हिस्सा अपने खेत पर की गई खुद की मजदूरी से प्राप्त होता है। अर्थात किसान अपने खेत का मालिक भले ही है, पर वास्तव में वह चीनी मिलों या बाजार की उन ताकतों का मजदूर होता है जिन्हें वह फसल बेचता है। या यूं कहें कि वह मालिक होने के भ्रम में जीने वाला एक मजदूर होता है। जैसे-जैसे जोत का आकार घटता है या फसलों के दाम गिरते हैं, वैसे-वैसे यह तस्वीर और ज्यादा साफ नजर आने लगती है।

उत्पादन आय 2,01,015 रुपये में से 61,250 रुपये यानी 30 फीसदी हिस्सा पशुओं पर तथा बाकी 113,090 रुपया घर के बाकी कामों पर खर्च होता है। इन जरूरी खर्चों के बाद इनके पास मात्र 26,775 रुपये की बचत होती है। इसी बचत के सहारे परिवार के बड़े खर्चे, जैसे शादी-विवाह, उत्पादन के साधनों की खरीद, मकान बनाने आदि का काम करना पड़ता है। जाहिर सी बात है कि इतनी कम बचत से ये खर्च पूरे नहीं किये जा सकते ।इसलिए ऐसे अवसरों पर इन्हें हमेशा कर्ज लेना पड़ता है। इन्होंने बताया जब इनकी उम्र 16 साल थी और पिता का परिवार अभी बंटा नहीं था, केवल उसी दौरान उनके परिवार पर कर्ज का बोझ नहीं था। इसके बाद वे कभी कर्ज से मुक्त नहीं रहे। आज भी इनके ऊपर 75,000 रुपये का कर्ज है। बच्चों की शादी में हमेशा कर्ज लेना पड़ा जिसे उन्होंने धीरे-धीरे करके कई सालों में चुकाया। बचत कम होने के कारण 4 कमरों का मकान बनाने में 17 साल लग गये। अभी भी उसमें कुछ काम बाकी है।

खेती के अलावा ये पशुपालन भी करते हैं। इनके पास दो गायें, एक भैंस, एक भैंसा और तीन बछड़े-बछिया हैं। इनकी गाय और भैंस जितना दूध देती है, लगभग लगभग उसकी कीमत कू बराबर ही उन पर खर्च आता है। भैंसों से भी खेती के काम के अलावा कोई दूसरी कमाई नहीं होती। पशुपालन से जो थोड़ी बहुत बचत होती है वह पुराने पशुओं की कीमत में कमी और नये पशुओं की खरीद से बराबर होती रहती है। अर्थात पशुपालन से इनको घर के लिए घी-दूध से अतिरिक्त अन्य कोई आय प्राप्त नहीं होती।

इनकी आमदनी का कोई बाहरी स्रोत भी नहीं है। ऐसा नहीं कि इन्होंने कभी इस दिशा में प्रयास नहीं किया। एक-दो बार ऐसी कोशिश की, लेकिन व्यवसाय चल नहीं पाया। अभी भी ये अपने ट्रैक्टर से भाड़े पर माल ढुलाई करने या दूध बेचने के लिए भैंस खरीदने की सोच रहे हैं। यानी अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए वे ऐसे काम भी करने को तैयार हैं जिन्हें कल तक इनके दादाजी, पिताजी या ये खुद भी सम्मानजनक नहीं समझते थे। लेकिन हर व्यवसाय में मंदी और पूंजी की कमी को देखते हुये निकट भविष्य में इनकी आर्थिक स्थिति में किसी बड़े बदलाव की सम्भावना नजर नहीं आती

> दुनिया की विकास-यात्रा का कोई अन्त नहीं है। दुनिया के इतिहास में ऐसी मिसालें भी हैं जब किसानों ने दूसरे मेहनतकश वर्गों के साथ मिलकर अपने कन्धों से शोषण का जुआ उतार फेंका और इंसान के रूप में शानदार जिन्दगी जीने का हक हासिल किया। जरूरत इस बात की है कि हम सपने देखें और उन्हें साकार करने के प्रयास में लग जायें।

अब हम इनकी फिलहाल की आमदनी 2,01,015 रुपये वार्षिक के आधार पर ही इनके जीवन स्तर का मूल्यांकन करेंगे। इनका संयुक्त परिवार तीन इकाई परिवारों का समूह है। इनकी कुल आमदनी को अगर उन तीनों में बांट कर देखा जाए तो यह प्रति इकाई परिवार 5583 रुपये मासिक बैठती है। अगर इस आय की तुलना समाज के दूसरे वर्गों से करके देखें तो यह केन्द्र सरकार के किसी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से लगभग 1500 रुपये कम है, परचून के एक छोटे दुकानदार के बराबर है या किसी छोटे शहर के व्यस्त सड़क या बस अड्डे के कोने पर पान की दुकान करने वाले व्यक्ति से भी कम है। यह किसी अच्छे राज मिस्त्री या दूधिया की आय के बराबर मानी जा सकती है।

इससे जाहिर होता है कि समृद्ध इलाके के एक गांव के 25 फीसदी ऊपरी तबके के एक परिवार की माली हालत समाज के दूसरे तबके की तुलना में क्या है। यह बात है कि राष्ट्रीय सर्वेक्षण के मुताबिक देश के 80 फीसदी किसान इससे भी आधी आय पर गुजारा करते हैं। लेकिन किसान की जिन्दगी का एक मात्र दुखद पहलू यही नहीं है। किसान के काम की प्रकृति और उसके रहन-सहन के स्तर अपनी आय वाली स्तर से भी बदतर है। इसका अनुमान किसानों के बारे में किए जाने वाले उस अपमानजनक मजाक से लगाया जा सकता है जिसमें एक सेठ खेत में काम करते हुए किसान को देखकर कहता है कि अगर किसान नहीं होते तो खेती भी इन्सानों को ही करनी पड़ती। यह सिर्फ मजाक नहीं बल्कि एक कड़वी सच्चाई है जिसे किसान की जिन्दगी के हर पहलू में देखा जा सकता है कि किसान किस प्रकार दोयम दर्जे का जीवन जीने को अभिशप्त है। सरकारी दफ्तर में काम करने वाला छोटे से छोटा कर्मचारी भी साफ-सुथरे घर में रहता है, अपने बच्चे को अच्छे स्कूल में पढ़ाता है, उसके घर में पत्र-पत्रिकाएं आती हैं तथा बिजली, पानी, इलाज और मनोरंजन आदि की सुविधाएं भी उसे मिलती हैं।

किसान के दैनिक खर्च के कुछ महत्त्वपूर्ण मदों से इसे और भी स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। परिवार के ऊपर इनका कुल खर्च जितना होता है, उसका 60 फीसदी, यानी आधे से अधिक तो केवल भोजन पर ही खर्च हो जाता है। बाकी मदों पर खर्च करने के लिए केवल 40 फीसदी हिस्सा बचता है। इसका मतलब यह नहीं है कि ये बहुत अच्छा भोजन ग्रहण करते हैं और खाने-पीने के शौकीन हैं। घर में किसी त्योहार या मेहमान के आने पर ही थोड़ा-बहुत अतिरिक्त र्खच करते हैं। खाने में फल और सलाद जैसे जरूरी चीजें भी शामिल नहीं होतीं।

थोड़ा अच्छा भोजन करने वाले किसानों के उजड़ने के किस्से गांवों में चटकारे लेकर कहे जाते हैं। रोटी के साथ अचार और प्याज देने पर नाराज होकर किसान द्वारा अपनी पत्नी को डांटने के चुटकुले सुनाये जाते हैं कि दो-दो सब्जी देकर घर उजाड़ेगी क्या? सच्चाई यही है कि थोड़ा ढंग का भोजन करने पर ही किसान की अर्थव्यवस्था चरमरा जाती है। दूसरी ओर, पांच-सितारा होटलों में बैठ कर आयातित फ्रान्सीसी शैम्पेन और रूसी वोदका की चुस्कियों के साथ इटालियन, मंचूरियन और मैक्सिकन भोजन पर लाखों उड़ाने वाले लोग लगातार धनी होते जा रहे हैं।

खाने पर खर्च करने के बाद जीवन की बाकी अवश्यकताओं पर खर्च करने लिए 63,540 रुपये बचते हैं। इसमें दो बच्चों की पढ़ाई, 11 लोगों का इलाज, जूता, कपड़ा, बिजली और मेहमाननवाजी जैसे महत्त्वपूर्ण खर्चे आते हैं। इस खर्च से इनके जीवन-स्तर का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। परिवार के मुखिया ने बताया कि पशु खरीदने और एक बार ट्रैक्टर खरीदने के अलावा वे किसान यूनियन की रैली में ही घर से दूर गये हैं। बिना जरूरी काम के वे रिश्तेदारी में भी नहीं जाते। खेल-कूद और मनोरंजन जैसी गतिविधियों पर खर्च न के बराबर है। बीमार होने पर सामान्यत: नीम-हकीमों द्वारा ही इलाज कराते हैं। गम्भीर बीमारी होने पर ही अच्छे डाक्टर को दिखाते हैं। जूते, कपड़े आदि पर खर्चों की भी यही स्थिति है। परिवार के मुखिया ने 5 वर्षों में केवल एक जोड़ी जूता खरीदा जिसका वे खास अवसरों पर ही इस्तेमाल करते हैं। बाकी समय अपने लड़कों की पुरानी चप्पलें पहन कर काम चला लेते हैं। इनके परिवार का एकमात्र खर्च जिस पर भद्रजनों की नजरें टेढ़ी हो सकती हैं, वह है बीड़ी और तम्बाकू जिस पर ये रोज 3 रुपये खर्च करते हैं। ऐसे ही ढेर सारे तथ्य हैं जो इनकी जिन्दगी का आईना हैं। लेकिन आज भी किसानों की कम चेतना का लाभ उठाकर उत्तम खेती, मध्यम बान जैसे सामन्ती जमाने के मुहावरों से किसानों के झूठे दम्भ की तुष्टि की जाती है। पुराने युगों की दुर्दशा से मौजूदा स्थिति की तुलना करके किसानों में सन्तुष्टि का भाव भरने का प्रयास किया जाता है। अगर हम पिछले युगों से तुलना करें तो समाज के विकास के साथ-साथ निश्चित रूप से

शेष पृष्ठ 5 पर